ISSN: 2456–4397 RNI No. UPBIL/2016/68067 VOL.- IX , ISSUE- X January - 2025
Anthology The Research

वैश्वीकरण एवं भारत पर इसका प्रभाव

Globalisation and Its Impact on India

Paper Id : **19546** Submission Date : **2024-12-27** Acceptance Date : **2025-01-06** Publication Date : **2025-01-09**
This is an open-access research paper/article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.
DOI:10.5281/zenodo.14632452
For verification of this paper, please visit on http://www.socialresearchfoundation.com/anthology.php#8

माया शर्मा
यूजीसी नेट
भूगोल विभाग
विमलपुरा (कालाडेरा),
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

वैश्वीकरण एक उभरती हुई सशक्त वैश्विक वास्तविकता है जो अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में गुंजायमान है। वैश्वीकरण शब्द व्यापार अवसरों की जीवंतता एवं उनके विस्तार का द्योतक है। प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य वैश्वीकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारत पर पड़ने वाले इसके प्रभावों का विश्लेषण करना है। शोध पत्र में वैश्वीकरण के विकास में योगदान देने वाले कारकों की विवेचना की गई है। शोध पत्र में वैश्वीकरण की विशेषताओं का भी वर्णन किया गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से विकासशील देश किस प्रकार प्रभावित हुए है, इसका विश्लेषण भी शोध पत्र में किया गया है। भारत के लिए वैश्वीकरण कितना उपयोगी एवं चुनौतीपूर्ण है, इसकी व्याख्या भी शोध पत्र में की गई है।

सारांश का अंग्रेज़ी अनुवाद

Globalization is an emerging powerful global reality that is resonating in the international market. The word globalization signifies the vibrancy and expansion of business opportunities. The purpose of writing this research paper is to clarify the meaning of globalization and analyze its effects on India. The research paper discusses the factors contributing to the development of globalization. The characteristics of globalization have also been described in the research paper. The research paper also analyzes how developing countries have been affected by the process of globalization. The research paper also explains how useful and challenging globalization is for India.

मुख्य शब्द उदारीकरण, विश्व व्यापार संगठन, व्यापार-असंतुलन, राष्ट्र राज्य, ग्लोबल विलेज।

मुख्य शब्द का अंग्रेज़ी अनुवाद Liberalisation, World Trade Organisation, Trade-Imbalance, Nation State, Global Village.

प्रस्तावना

वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में असीम संभावनाएँ बढ़ाई है वहीं दूसरी तरफ इसने समाज में विषमताओं को भी जन्म दिया है। वर्तमान में वैश्वीकरण के प्रभाव से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। वैश्वीकरण एक परिघटना न होकर एक प्रक्रिया है जो क्रमशः एवं चरणबद्ध तरीके से वैश्विक समुदाय को एकीकृत करने का प्रयास कर रही है। वैश्वीकरण की यह प्रक्रिया उतनी ही पुरानी है, जितनी मानव सभ्यता।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य वैश्वीकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारत पर पड़ने वाले इसके प्रभावों का विश्लेषण करना है।

साहित्यावलोकन

वैश्वीकरण अथवा भूमण्डलीकरण वस्तुतः व्यापारिक क्रिया-कलापों विशेषकर विपणन सम्बन्धी क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करना है जिसमें सम्पूर्ण विश्व बाजार को एक ही क्षेत्र के रूप में

देखा जाता है। दूसरे अर्थ में वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है। व्यापार-वाणिज्य राष्ट्र की सीमाओं तक सीमित न रहकर विश्व व्यापार में निहित तुलनात्मक लागत लाभ दशाओं का विदोहन करने की दिशा में अग्रसर होता है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार ''वैश्वीकरण माल तथा सेवाओं में व्यवहार की क्रॉस-बॉर्डर विविधता, अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी प्रवाह एवं विश्व स्तर पर राष्ट्रों की बढ़ती अन्तर्निर्भरता है तथा टेक्नोलॉजी के तेजी से बिखराव एवं फैलाव की व्यवस्था है।''[1] मिश्र एवं पुरी के अनुसार साधारण शब्दों में सार्वभौमिकरण या वैश्वीकरण का अर्थ है- विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना। भारतीय सन्दर्भ में इसका अर्थ है विदेशी कम्पनियों को भारत की विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में निवेश करने की अनुमति देकर अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोलना, विदेशी विनिमय नियंत्रण अधिनियम जैसे कानूनों को धीर-धीरे समाप्त करके बहुराष्ट्रीय निगमों को देश में आने की व निवेश करने की सुविधाएँ प्रदान करना, भारतीय कम्पनियों को विदेशी कम्पनियों के साथ सहयोग करने की अनुमति देना तथा दूसरे देशों में संयुक्त परियोजनाएँ चालू करने के लिए प्रोत्साहित करना, मात्रात्मक प्रतिबंधों के स्थान पर धीरे-धीरे प्रशुल्कों को प्रतिस्थापित करना एवं फिर धीरे-धीरे उनको कम कर देना जिससे आयात उदारीकरण कार्यक्रमों को व्यापक आधार पर लागू किया जा सके तथा कई तरह के निर्यात प्रोत्साहनों (जैसे नकद मुआवजा सहायता, शुल्क वापसी की व्यवस्था, आयात पुनः पूर्ति योजना, राजकोषीय रियायतों इत्यादि) के स्थान पर विनिमय दर में परिवर्तनों द्वारा निर्यातों को प्रोत्साहित करना।''[2]

मुख्य पाठ

डॉ. विमल जालान के अनुसार, ''भूमण्डलीकरण शब्द का प्रयोग कई तरह से हुआ है। एक अर्थ तो शाब्दिक है कि अब राष्ट्रों के बीच भौगोलिक दूरी बेमानी हो चुकी है। दुनियाँ काफी छोटी हो चुकी है और कोई भी देश अपना नुकसान करके ही शेष विश्व से खुद को अलग-थलग रख सकता है। वैश्वीकरण का दूसरा अर्थ ठीक उल्टा निकाला जा रहा है। इसके अनुसार यह देशी हितों की जगह दूसरे देशों और बहुराष्ट्रीय निगमों के हितों को ऊपर रखने वाले नीतिगत बदलाव का नाम है। मानव विकास रिपोर्ट, 2000 ने वैश्वीकरण को निम्न चार विशेषताओं के माध्यम से परिभाषित किया है-

1. नये बाजार- विदेशी विनिमय तथा पूंजी बाजार वैश्वीय स्तर पर जुड़े हुए हैं और ये बाजार हर क्षण काम करते हैं। इन नये बाजारों के लिए भौतिक दूरियाँ कोई मायने नहीं रखती है।
2. नये कर्ता- वैश्वीकरण की प्रक्रिया ऐसी है जिसमें कार्य सम्पादन के लिए कई सारे कर्ता है। इन कर्ताओं (Actors) में विश्व बाजार संगठन (WHO), रेडक्रॉस, कई राष्ट्रों से मिलकर बने अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन एवं गैर सरकारी संगठन शामिल है।
3. नये नियम- वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में सारे काम संविदा (Contract) के माध्यम से होते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ दुनिया भर के राष्ट्र-राज्यों के साथ सीधा व्यापार समझौता करती हैं।
4. नये उपकरण- वैश्वीकरण के दौर में लोगों के लिए कई नये उपकरण (Tools) आ गए हैं। इनमें सेल्यूलर फोन्स, मीडिया तन्त्र, इन्टरनेट लिंक्स एवं ई-बिजनेस मुख्य रूप से है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं के आर-पार आर्थिक लेन-देन की प्रक्रियाओं एवं उनके प्रबन्धन का प्रवाह है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से जोड़ा जाता है, जिससे सम्पूर्ण विश्व में पूँजी, तकनीक, माल, संचार तथा व्यक्तियों का आवागमन सुलभ हो सके। विश्व अर्थव्यवस्था में आया खुलापन, आपसी जुड़ाव एवं परस्पर निर्भरता का फैलाव ही वैश्वीकरण है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व एक ही अर्थव्यवस्था तथा एक ही बाजार के रूप में कार्य करता है। सामान्यतया वैश्वीकरण में निम्नांकित तत्त्व सम्मिलित होते हैं-

1. वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान-प्रदान को सरल बनाने के लिए व्यापार अवरोधों को कम करना;
2. प्रौद्योगिकी के निर्बाध प्रवाह के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना;
3. राष्ट्र-राज्यों में पूँजी के स्वतन्त्र प्रवाह के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ उत्पन्न करना;
4. विश्व के विभिन्न देशों में श्रम का निर्बाध प्रवाह सम्भव बनाना।

वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारक

उदारीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन ने वैश्वीकरण के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इन दोनों कारकों के अतिरिक्त भूमण्डलीकरण के विकास हेतु अन्य कारण भी उत्तरदायी है जो निम्नांकित हैः-

1. संचार, परिवहन एवं उत्पादन के साधनों के विकास से विश्व के राष्ट्रों के मध्य भौतिक दूरियाँ कम हुई हैं तथा सभी वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो सकी है।
2. विश्व में विकासशील राष्ट्रों की सरकारों ने उदारवादी आर्थिक नीतियों को अपनाया है तथा विदेशी निवेशकों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने देश में निवेश हेतु आमंत्रित किया है।
3. वर्तमान विश्व में कोई भी राष्ट्र आत्मनिर्भर नहीं है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था की वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भरता बढ़ती जा रही है।
4. आर्थिक विकास हेतु प्रत्येक राष्ट्र को वैश्वीकरण की नीतियों को अपनाना आवश्यक हो गया है।
5. ''घरेलू बाजार की सीमाएँ एवं प्रतिस्पर्धी क्षमता भी भूमण्डलीकरण को प्रोत्साहन दे रही है।''[3]

वैश्वीकरण की विशेषताएँ

वर्तमान समय में हम जिस वैश्वीकरण की चर्चा करते हैं, उसका उद्भव लगभग 30 वर्ष पूर्व बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रहारों और अनुदारवादी आन्दोलन में मिलता है, जिसने पश्चिमी दुनिया को अपने शिकंजे में पकड़ लिया था एवं जिसके प्रणेता ब्रिटेन की थैचर, जर्मनी के कोहल तथा अमेरिका के रोनाल्ड रीगन थे। बहुराष्ट्रीय निगम एवं बैंक पूरे विश्व में अपने चरण बढ़ाने लगे थे तथा पूँजी एवं मुद्रा पर लगी सीमाओं को तोड़ते हुए व्यापार एवं विनिवेश के लिए मुक्त द्वार का नारा बुलन्द करने लग गए थे। इनका तर्क था कि मुक्त बाजार से आर्थिक विकास की दर में बढ़ोतरी होगी, जिसके परिणामस्वरूप निर्धनता में कमी आएगी एवं निर्धनता में कमी लोकतंत्र की सुदृढ़ता एवं विकास में सहायक होगी। वैश्वीकरण की विशेषताओं को हम निम्नानुसार समझ सकते हैं-

1. **मुक्त व्यापार-** वैश्वीकरण ने न्यूनतम हस्तक्षेप के साथ राष्ट्रों के मध्य व्यापार की मात्रा में सुधार करने में मदद की है। व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को कमजोर करते हुए वैश्वीकरण ने राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक व्यापारिक निर्भरता को बढ़ावा दिया है। विदेशी निवेशकों एवं बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए व्यापारिक नियमों में पर्याप्त शिथिलता बरती गई है।
2. **उदारीकरण-** वैश्वीकरण की एक मुख्य विशेषता निगमों के लिए कारोबारी माहौल में सुधार है। व्यापार विनियमों में लचीलापन सरकारों को उद्योगों को और अधिक रियायतें देने के लिए प्रेरित करता है। वैश्वीकरण एवं उदारीकरण दोनों एक दूसरे पर निर्भर है।
3. **राष्ट्रों के मध्य कनेक्टिविटी में बढ़ावा-** यातायात एवं संचार के साधनों में हुए क्रांतिकारी विकास के चलते राष्ट्रों के मध्य भौगोलिक दूरियाँ सिमट गई है। अब न केवल व्यापार, तकनीकी एवं सेवा क्षेत्र में, बल्कि लोगों का भी सीमा पर आवागमन सस्ता एवं सुगम हो गया है।
4. **रोजगार के अवसरों में वृद्धि-** वैश्वीकरण कंपनियों को उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में परिचालन स्थापित करने में सहायता करता है। यह उन राष्ट्रों में काम के अवसरों को बढ़ाने में भी मदद करता है जहाँ इन निगमों ने परिचालन स्थापित किया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार

प्रदायक की भूमिका निभा रही हैं। विभिन्न राष्ट्रों से विशेषज्ञों, प्रबन्धकों, कुशल-अर्द्धकुशल श्रमिकों इत्यादि की नियुक्ति इन निगमों द्वारा की जाती है।

5. **संस्कृति का वैश्वीकरण-** दूरसंचार के साधनों के उदारीकरण के सहारे समष्टि संस्कृति दुनिया भर पर राज करने को तैयार है। आज सारा संसार एक ही टीवी कार्यक्रमों, फिल्मों, समाचार, संगीत, जीवनशैली एवं मनोरंजन के साधनों से तारबद्ध होकर जुड़ गया है। ''लांगमैन का मानना है कि वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक पहचानों का रूपान्तरण किया है। अन्य बाजारों की तरह संस्कृति के बाजार भी खुल गए हैं।''[4] लोगों के बीच संपर्क में सुधार ने सांस्कृतिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों के मेलजोल को बढ़ावा दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की दूर दराज तक की पहुँच ने एक ग्लोबल संस्कृति की स्थापना कर दी है। उपभोक्तावाद भी आज एक तरह से समूचे विश्व की संस्कृति बन गया है।
6. **शहरीकरण-** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप शहरी केन्द्रों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है। जब कोई विदेशी या स्थानीय कम्पनी किसी विशेष क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करती है तो वह क्षेत्र आर्थिक गतिविधि का केन्द्र बन जाता है जिसके परिणामस्वरूप उस क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है। वैश्वीकरण औद्योगिक क्षेत्रों एवं उसके आसपास के इलाकों को शहरी केन्द्रों के निर्माण की ओर ले जाता है।
7. **आउटसोर्सिंग-** वैश्वीकरण कंपनियों को विशिष्ट प्रक्रियाओं के प्रबंधन के लिए देश के बाहर से तीसरे पक्ष को लाने की अनुमति देता है। आउटसोर्सिंग मानव संसाधन समृद्ध देशों के लिए बहुत बड़ा वरदान है जो रोजगार उत्पन्न करना चाहते हैं। आउटसोर्सिंग के परिणामस्वरुप विकासशील राष्ट्रों को बहुत लाभ हुआ है।
8. **शिक्षा का भूमण्डलीकरण-** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप शिक्षा का सार्वभौमिकरण हुआ है। अमेरिका जैसे औद्योगिक देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने जो विदेशी छात्र जाते हैं, उनमें से अधिकांश वहीं अमेरिका में रह जाते हैं। दूसरी तरफ आज अनेक विकासशील राष्ट्रों के शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम भी विश्वस्तरीय हो गए हैं, जिससे यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी विश्व के किसी भी कोने में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव

सितम्बर, 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से तत्कालीन महासचिव कोफी अन्नान ने कहा था कि ''वैश्वीकरण के लाभ स्पष्ट है- अधिक तेज गति से विकास, रहन-सहन का उच्चतर स्तर, देशों और व्यक्तियों के लिए नए-नए अवसर...। अपनी तरफ से संयुक्त राष्ट्र को यह सुनिश्चित करना होगा कि वैश्वीकरण से केवल कुछ को नहीं, बल्कि सबको लाभ मिले, अवसर कुछ विशेष लोगों को ही नहीं बल्कि प्रत्येक मानव को प्रत्येक जगह मिले।''[5] वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों को निम्नानुसार समझा जा सकता है-

1. वैश्वीकरण से वैश्विक व्यापार में बढ़ोतरी हुई है तथा वैश्विक बाजार का विस्तार हुआ है। वैश्वीकरण से देशों के बीच व्यापार बढ़ता है और उनके आर्थिक संबंध मजबूत होते हैं। व्यापार के क्षेत्र में खुलापन आया है एवं विदेशी निवेश के प्रति उदारता बढ़ी है।
2. वैश्वीकरण से उत्पादन क्षमता का विकास हुआ है तथा उत्पादन क्षमता का निर्धारण केवल बाजार शक्तियों द्वारा स्वतंत्र रूप से होता है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा की वजह से उत्पादन में वृद्धि होती है।
3. वैश्वीकरण के माध्यम से उपभोक्ताओं को दुनिया के विभिन्न हिस्सों से वस्तुओं एवं सेवाओं की व्यापक रेंज प्राप्त होती है।
4. वैश्वीकरण सीमाओं के पार ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है, जिससे नवाचार और प्रगति को बढ़ावा मिलता है। वैश्वीकरण से तकनीकी शोध, अनुसंधान, आविष्कार तथा औद्योगिकी उत्पादन की नवीन तकनीकों का विकास होता है।

5. ''वैश्वीकरण के कारण व्यावसायिक संस्थाओं को स्थानान्तरण की सुविधा मिल जाती है। उदाहरणार्थ- खाड़ी युद्ध के समय कुवैत बैंक ने अपने कारोबार को बहरीन में प्रत्यारोपित करना उपयुक्त समझा।''[6]
6. वैश्वीकरण के माध्यम से ग्लोबल संस्कृति को बढ़ावा मिला है तथा विभिन्न संस्कृतियों के बीच अंतःक्रिया एवं अंतर-सांस्कृतिक समझ विकसित हुई है।
7. वैश्वीकरण ने रोजगार के अवसरों में अत्यधिक वृद्धि की है। जैसे-जैसे व्यवसाय विस्तार करते हैं एवं नये बाजारों में निवेश करते हैं तो वे विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं, बेरोजगारी को कम करते हैं तथा लोगों की आजीविका में सुधार करते हैं।
8. वैश्वीकरण से सूचनाओं के प्रसार को बढ़ावा मिलता है। वैश्वीकरण द्वारा संभव हुआ सूचना एवं विचारों का तीव्र प्रसार व्यक्तियों को सशक्त बनाता है।
9. वैश्वीकरण से मानव जीवन के स्तर में सुधार हुआ है। श्रेष्ठ वस्तुएँ, दवाएँ, शिक्षा, मनोरंजन तथा अधिक आराम का समय उपलब्ध होने से लोगों का जीवन अधिक सुखमय एवं उच्च स्तर का होने लगा है।
10. वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सम्प्रभुताएं एक तरह से सीमाविहीन होने लगी है। विभिन्न देशों की सीमाओं का अब सिर्फ भौगोलिक महत्त्व रह गया है। संचार क्रान्ति एवं वैश्वीकरण ने विभिन्न जातीयताओं, नस्लों और अस्मिताओं को एक नए तरह की गतिशीलता और सतर्कता प्रदान की है।

वैश्वीकरण के नुकसान

वैश्वीकरण के लाभ के साथ-साथ कुछ नुकसान भी हैं जो निम्नानुसार है-

1. **शोषण-** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसी नए बाजार में प्रवेश करने पर श्रम एवं संसाधन प्राप्त करती है। विकसित राष्ट्र अक्सर विकासशील देशों के साथ उनके संसाधनों का अनियंत्रित रूप से उपयोग करने के लिए समझौते करते हैं। निर्धन राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की शर्तों पर अपने संसाधनों को कम कीमत पर बेचने को मजबूर होते हैं।
2. **व्यापार असंतुलन-** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप विकसित राष्ट्रों का विकासशील राष्ट्रों को किया जाने वाला निर्यात तो पर्याप्त मात्रा में बढ़ा है परन्तु विकासशील राष्ट्रों का निर्यात उनके आयात की मात्रा में काफी कम हुआ है। विकासशील राष्ट्रों को इस वजह से काफी व्यापार घाटा होता है एवं इस घाटे की पूर्ति के लिए उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। ऐसे व्यापार घाटे वाले राष्ट्र विदेशी निवेशकों के साथ उनकी संपत्तियों के बदले में समझौता करने वाले सौदे करते हैं।
3. **पर्यावरणीय नुकसान-** वैश्वीकरण का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण ने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिंग एवं वायु प्रदूषण जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। वनों की कटाई, पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश, जैव विविधता को नुकसान एवं प्लास्टिक प्रदूषण जैसी गंभीर चुनौतियों का एक मुख्य कारण वैश्वीकरण ही है।
4. **देशी उद्योगों का पतन-** वैश्वीकरण के कारण स्थानीय उद्योग धीरे-धीरे बन्द होते जा रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सामने देशी उद्योग टिक नहीं पाते हैं, उनका सामान बिक नहीं पाता है या घाटे में बेचना पड़ता है। वैश्वीकरण ने विकासशील राष्ट्रों के देशी उद्योगों को एक प्रकार से समाप्त सा कर दिया है। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ स्थानीय उद्योगों को निगलती जा रही हैं।
5. **राष्ट्र राज्य की संकल्पना का कमजोर होना-** वैश्वीकरण राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करता है। वैश्वीकरण सम्पूर्ण विश्व को 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित करता है, जिससे राष्ट्र-राज्य की संकल्पना कमजोर हुई है।

6. **विश्वव्यापी आर्थिक मंदी को बढ़ावा-** वैश्विक मंदी की संभावना उन वैश्विक बाजारों में अधिक होती है जो मजबूती से एकीकृत होते हैं। वैश्विक बाजार किस तरह आपस में जुड़े हुए हैं और एक देश या क्षेत्र के वित्तीय मुद्दे किस तरह दुनिया के अन्य हिस्सों को जल्दी प्रभावित कर सकते हैं, इसका एक अच्छा उदाहरण 2007-2009 का वित्तीय संकट और महान मंदी है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की अलग-अलग देशों की क्षमता वैश्वीकरण से कम हो जाती है।
7. **सामाजिक मूल्यों का पतन-** वैश्वीकरण ने विकासशील राष्ट्रों के सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुँचाया है। ''वैश्वीकरण के बुरे प्रभाव परिवारों के विखण्डन, पारिवारिक सम्बन्धों की उपेक्षा, सामाजिक मर्यादाओं और परम्पराओं की अवहेलना, कामुकता से उत्पन्न उच्छृंखलता, पीढ़ियों के बीच की मर्यादा की समाप्ति आदि रूपों में आ रहे हैं।''[7]

भारत पर वैश्वीकरण का प्रभाव

भारत में वैश्वीकरण की शुरूआत 1990 के दशक में प्रारम्भ हुई, जब भारत सरकार ने भारत के सभी बाजारों को विदेशी निवेश के लिए खोल दिया। भारत सरकार ने आर्थिक नीतियों में नए सुधारों को लागू किया, जिसे आर्थिक उदारीकरण के रूप में जाना जाता है। भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ''बन्द बाजार की अर्थव्यवस्था को अपनाकर आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की कोशिश की परन्तु उसमें वह सर्वथा विफल रहा एवं स्वावलम्बी बनना तो दूर वह पूरी तरह से विदेशी शक्तियों पर निर्भर हो गया। इसी विफलता के परिणामस्वरूप उसे खुले बाजार की अर्थव्यवस्था को अपनाने पर मजबूर होना पड़ा।''[8] भारतीय अर्थव्यवस्था ने विदेशी निवेश को सुविधाजनक माहौल प्रदान करने के लिए निवेश नीतियों में सुधार किए हैं। विदेशी निवेश प्रतिबंधों को कम करके भारत ने विदेशी कंपनियों को अपने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करने की सुविधा प्रदान की है।

वर्तमान में भारत में वैश्वीकरण को लेकर यह विचारणीय बहस है कि भारत जैसे विकासशील देश के लिए इसकी कितनी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता है। वैश्वीकरण के फायदों एवं नुकसानों को लेकर जो बहस चल रही है वह सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है बल्कि समूचे विश्व में इस मुद्दे पर बहस चल रही है। ''वैश्वीकरण की कड़ी आलोचना अर्थशास्त्र में 2001 में प्राप्त नोबेल पुरस्कार विजेता और विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री जोफ़ेज स्टिग्लिटज ने अपनी पुस्तक ''वैश्वीकरण और इसकी निराशाएं'' (Globalization and its Discontents) में प्रस्तुत की है। वैश्वीकरण के सामाजिक आयाम पर विश्व आयोग ने भी विश्व भर में वैश्वीकरण के अनुभव पर विचार किया है। विश्व आयोग ने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया; वैश्वीकरण का मौजूदा मार्ग बदलना होगा। इससे बहुत थोड़े लोगों को लाभ होता है।''[9]

वैश्वीकरण का भारत पर सकारात्मक प्रभाव

1. वैश्वीकरण से भारत में तीव्र गति से आर्थिक विकास हुआ है। भारत में पर्याप्त मात्रा में विदेशी निवेश हुआ है।
2. वैश्वीकरण से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। ''ज्ञान पर आधारित सेवाओं, जैसे पेशेवर व तकनीकी सेवाओं का बहुत तेजी से विस्तार हो रहा है। भारत में प्रौद्योगिकीय व शैक्षणिक संस्थाओं का विकसित ढाँचा मौजूद है और श्रम लागतें नीची हैं, इसलिए भारत इन सेवाओं की आपूर्ति करके भारी लाभ कमा सकता है।''[10]
3. वैश्वीकरण से भारत में प्रौद्योगिकी की उन्नति हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं परिवहन के सुधार में भारत ने बहुत बड़ी छलांग लगाई है।

4. वैश्वीकरण से भारतीय नागरिकों के रहन-सहन के स्तर में सुधार हुआ है। प्रति व्यक्ति आय बढ़ी है।
5. वैश्वीकरण से रोजगार के पर्याप्त अवसर उत्पन्न हुए हैं, जिससे भारत में गरीबी का उन्मूलन संभव हुआ है।
6. भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ है।
7. वैश्वीकरण ने हाशिये पर रहने वाले समूहों को उनके अधिकारों, पहचान एवं गरिमा पर बल देने में मदद की है।
8. वैश्वीकरण ने महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता तथा राजनीति में भाग लेने के ज्यादा अवसर प्रदान किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है।

वैश्वीकरण का भारत पर नकारात्मक प्रभाव

1. वैश्वीकरण ने भारत के पारंपरिक शिल्प एवं स्वदेशी उद्योगों को पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है।
2. वैश्वीकरण का लाभ आर्थिक रूप से सशक्त वर्गों तक ही सीमित रहा है। समाज के गरीब एवं कमजोर वर्ग तक या तो यह लाभ पहुँचा ही नहीं या बहुत कम पहुँचा है, जिससे भारत में आर्थिक विषमता को बढ़ावा मिला है।
3. वैश्वीकरण ने भारत की पारंपरिक संस्कृति को काफी नुकसान पहुँचाया है। वैश्वीकरण ने भारत के परंपरागत मूल्यों, सिद्धान्तों, मान्यताओं एवं बुनियादी सामाजिक संस्थाओं को पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है।
4. वैश्वीकरण ने आर्थिक पहलू पर ज्यादा ध्यान दिया है, जिससे पर्यावरणीय पहलुओं की अनदेखी हुई है। वैश्वीकरण से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ा है, प्रदूषण बढ़ा है एवं वनों को पर्याप्त नुकसान पहुँचा है।
5. वैश्वीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों में कार्यरत महिलाओं का वस्तुकरण हुआ है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण का प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूप से रहा है। आज हमारे जीवन स्तर, यातायात, संचार, चिकित्सा एवं तकनीकी के साधनों में सुधार तो हुआ है, परन्तु अनियंत्रित विकास प्राणहंता बन रहा है। हमें अपनी आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखते हुए भावी संतति के भविष्य के लिए भी सोचना होगा। भविष्य में हमें जल-जंगल-जमीन, तेल, ईंधन, औद्योगिक कचरा, पर्यावरण, जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, शिक्षा, कृषि, गरीबी इत्यादि न जाने कितनी सारी चुनौतियों से जूझने के लिए तैयार रहना होगा जो वैश्वीकरण के प्रतिफल बाजार एवं उसकी आड़ में फलित नई सभ्यता की देन है। आज हमें यह स्वीकार करना होगा कि वैश्वीकरण एक उभरती हुई सशक्त वैश्विक वास्तविकता है जो अपनी गति से क्रियाशील है। भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में यह सुनिश्चित करना है कि वह अपने लिए इससे अधिकतम लाभ उठा सके और इसमें निहित जोखिमों को न्यूनतम किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वर्ल्ड ट्रेड प्रेस, कैलिफोर्निया, 2003 (चार्ल्स मिशेल, इन्टरनेशनल बिजनेस कल्चर), पृ.सं. 3*
2. *मिश्र एवं पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, बम्बई, 2005 (सत्रहवां संस्करण), पृ.सं. 44*
3. *कोठारी, राकेश कुमार एवं जैन, पी.सी., अन्तर्राष्ट्रीय विपणन, जयपुर, पृ.सं. 21-22*
4. *भार्गव, नरेश, वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2014, पृ.सं. 97*
5. *फड़िया, बी.एल. एवं फड़िया, कुलदीप, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020, पृ.सं. 607*

6. *गढ़वाल, शिखा, वैश्वीकरण, मानवाधिकार और गाँधी, लिट्रेरी सर्किल, जयपुर, 2013, पृ.सं. 9*
7. *खंडेला, मान चन्द, वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2014, पृ.सं. 67*
8. *कृष्ण, संदीप साईं, वैश्वीकरण की पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकल्प एकात्म मानववाद, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं. 15*
9. *दत्त, गौरव एवं महाजन, अश्विनी, भारतीय अर्थव्यवस्था, एस.चन्द एण्ड कम्पनी प्रा.लि. नई दिल्ली, 2016, पृ.सं. 251*
10. *दवे, रमन कुमार, वैश्वीकरण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, 2005, पृ.सं. 15*